अध्याय 7: बालगोबिन भगत

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 14 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1	प्रश्न-अभ्यास	8 प्रश्न
प्रश्नावली 7.2	रचना और अभिव्यक्ति	5 प्रश्न
प्रश्नावली 7.3	भाषा-अध्ययन	1 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

हल

बालगोबिन भगत गृहस्थ होते हुए भी निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे—

1. कबीर को 'साहब' मानते थे: वे कबीर को अपना 'साहब' मानते और उन्हीं के गीत गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते थे।
2. सत्यनिष्ठा: कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते थे।
3. परिग्रह से मुक्ति: किसी की चीज़ नहीं छूते, न बिना पूछे किसी की वस्तु व्यवहार में लाते। यहाँ तक कि दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते थे।
4. 'साहब' की सेवा: जो कुछ खेत में पैदा होता, उसे पहले साहब के दरबार (कबीरपंथी मठ) में 'भेंट' रूप में रख देते और जो 'प्रसाद' रूप में मिलता, उसी से गुज़र करते।
5. निर्लोभिता और सादगी: कपड़े बिलकुल कम पहनते — कमर में लंगोटी, सिर में कनफटी टोपी। जाड़े में काली कमली ओढ़ लेते।
6. सामाजिक प्रचलनों की अनदेखी: बेटे की मृत्यु पर भी उत्सव का भाव रखा; पतोहू से ही चिता को अग्नि दिलाई और श्राद्ध के बाद उसे पुनर्विवाह के लिए विदा किया।

इस प्रकार, सच्चे साधु की सभी परिभाषाओं पर वे खरे उतरते थे।

उत्तर: बालगोबिन भगत कबीर को 'साहब' मानते, कभी झूठ नहीं बोलते, किसी की वस्तु अनुमति बिना नहीं छूते, अपनी सारी उपज पहले साहब के दरबार में अर्पित करते और बाकी से गुज़र चलाते थे — इन्हीं कारणों से गृहस्थ होते हुए भी साधु कहलाते थे।

प्रश्न 2

भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

हल

भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि—

1. भगत बूढ़े हो गए थे और बुढ़ापे में देखभाल की आवश्यकता थी।
2. उसे चिंता थी कि 'बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा?'

3. उसे यह भी चिंता थी कि 'बीमार पड़े, तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा?'
4. पतोहू के जाने पर घर में कोई नहीं रहता — वह स्वयं घर की पूरी प्रबंधिका थी और भगत को दुनियादारी से निवृत्त कर रखा था।
वह भगत के प्रति स्नेह और कर्तव्य-भाव से बँधी थी, इसीलिए रो-रोकर उनके चरणों में पड़ती रही।

उत्तर: पुत्रवधू भगत को अकेला इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि वे बूढ़े और अकेले थे — बीमारी में देखभाल, भोजन-पानी देने वाला कोई न होता। वह उनके प्रति गहरे स्नेह और कर्तव्य से बँधी थी।

प्रश्न 3

भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं?

हल

भगत ने बेटे की मृत्यु पर अत्यंत असाधारण ढंग से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं—
1. शोक के स्थान पर संगीत: बेटे को आँगन में चटाई पर लिटाकर, सफेद कपड़े से ढाँककर, उस पर फूल और तुलसीदल बिखराए और सिरहाने चिराग जलाया। फिर सामने जमीन पर आसन जमाकर वे उसी पुराने स्वर और तल्लीनता से गीत गाते रहे।
2. उत्सव का भाव: वे कभी-कभी पतोहू के नज़दीक जाकर उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते।
3. आत्मा-परमात्मा का मिलन: उनका विश्वास था — 'आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात?'
4. पतोहू से अग्नि दिलाई: समाज की रूढ़ि तोड़ते हुए बेटे के क्रिया-कर्म में पुत्रवधू से ही आग दिलाई।
इस प्रकार भगत ने मृत्यु को विषाद नहीं, आनंद का क्षण माना — यह उनका चरम विश्वास था जो मृत्यु पर विजयी होता है।

उत्तर: भगत ने बेटे की मृत्यु पर विलाप नहीं किया, बल्कि वही पुराना संगीत गाते रहे। उन्होंने इसे आत्मा का परमात्मा से मिलन बताया और पतोहू को रोने के स्थान पर उत्सव मनाने को कहा।

प्रश्न 4

भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

हल

बालगोबिन भगत का व्यक्तित्व:
शारीरिक बनावट: वे मँझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। साठ से ऊपर की उम्र थी, बाल पक गए थे। लंबी दाढ़ी या जटाजूट नहीं रखते थे, किंतु सफेद बालों से उनका चेहरा सदा जगमग करता रहता था।
वेशभूषा: कपड़े बिलकुल कम पहनते — कमर में केवल एक लंगोटी और सिर पर कबीरपंथियों की-सी कनफटी टोपी। सर्दियों में ऊपर से एक काली कमली ओढ़ लेते। मस्तक पर रामानंदी चंदन का टीका जो नाक के एक छोर से शुरू होकर औरतों के टीके की तरह लगता था। गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला पहनते थे।
चारित्रिक व्यक्तित्व: अत्यंत सहज, सरल और निर्लोभी थे। सत्यवादी और स्पष्टवक्ता — किसी से दो-टूक बात करने में संकोच नहीं, पर खामखाह झगड़ा भी नहीं। कबीर के अनुयायी, भक्तिभाव में डूबे हुए और संगीत के माध्यम से ईश्वर की आराधना में रत।

उत्तर: भगत मँझोले, गोरे-चिट्टे, साठ पार के व्यक्ति थे। सादगी उनकी पहचान थी — लंगोटी, कनफटी टोपी, काली कमली, रामानंदी चंदन और तुलसी-माला। व्यक्तित्व में सत्यनिष्ठा, निर्लोभिता और कबीर-भक्ति स्पष्ट थी।

प्रश्न 5

बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

हल

बालगोबिन भगत की दिनचर्या कई कारणों से लोगों के अचरज का विषय थी—

1. असाधारण उठान: कार्तिक से फागुन तक प्रभातियाँ गाते थे — माघ की दाँत किटकिटाने वाली ठंड में भी भोर में उठकर दो मील दूर नदी-स्नान को जाते।
2. पोखरे पर गायन: स्नान के बाद गाँव के बाहर पोखरे के ऊँचे भिंडे पर खँजड़ी लेकर बैठ जाते और गाने लगते।
3. जाड़े में भी मस्ती: माघ की सुबह तारों की छाँव में भी उनके मस्तक पर श्रमबिंदु चमकते — यानी इतनी ठंड में भी उत्साह कम नहीं होता था।
4. ग्रीष्म में साँझ की बैठक: गर्मियों में घर के आँगन में समाज के लोगों को जुटाकर खँजड़ियों-करतालों के साथ गायन-नृत्य का वातावरण बना देते।
5. वार्षिक गंगा-स्नान यात्रा: तीस कोस दूर पैदल जाते, न किसी से भिक्षा माँगते, न संबल (सहारा) लेते — घर से खाकर चलते और घर लौटकर खाते।
6. बुढ़ापे में भी वही नेम-व्रत: बुढ़ापा आने के बाद भी जवानी वाली टेक न छोड़ी।

ये सब बातें आम जनजीवन से इतनी अलग थीं कि लोग अचरज करते थे।

उत्तर: भगत माघ की कड़ाके की ठंड में भी भोर में उठकर दो मील नदी-स्नान को जाते, पोखरे पर गाते, गर्मियों में साँझ को गायन-नृत्य करते और तीस कोस पैदल गंगा-स्नान को जाते — बुढ़ापे में भी यही नेम जारी था, इसीलिए लोगों को अचरज होता था।

प्रश्न 6

पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

हल

बालगोबिन भगत के मधुर गायन की निम्नलिखित विशेषताएँ पाठ में उल्लिखित हैं—

1. कबीर के सीधे-सादे पद: भगत कबीर के सरल पद गाते थे जो उनके कंठ से निकलकर 'सजीव' हो उठते थे।
2. स्वर में जादू: आषाढ़ की रिमझिम में खेत में कीचड़ से लथड़े काम करते हुए भी उनका स्वर ऐसा था कि बच्चे झूम उठते, औरतें गुनगुनाने लगतीं, हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते, रोपनी करनेवालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगतीं।
3. रात्रि में भी अप्रतिम: भादो की अँधेरी आधी रात में मुसलधार वर्षा के बाद झिल्ली और दादुरों के कोलाहल के बीच भी भगत का संगीत अपनी पहचान बनाए रखता था।
4. तल्लीनता: गाते-गाते इतने मस्त हो जाते कि कमली सिर से नीचे सरक जाती, मालूम होता अभी खड़े हो जाएँगे।
5. सामूहिकता: ग्रीष्म में घर के आँगन में प्रेमी-मंडली जुटती, एक पद भगत कहते, मंडली उसे दुहराती-तिहराती;

धीरे-धीरे स्वर और ताल का चढ़ाव ऐसा होता कि सबके तन-मन नृत्यशील हो उठते।
6. खँजड़ी का साथ: खँजड़ी बजाते हुए गाते थे — 'खँजड़ी डिमक-डिमक बज रही है।'

उत्तर: भगत कबीर के सरल पद गाते थे। उनका स्वर ऐसा जादुई था कि सुनने वाले झूम उठते। वे गाते हुए तल्लीन हो जाते। खँजड़ी के साथ सामूहिक गायन-नृत्य का वातावरण बन जाता था।

प्रश्न 7

कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

हल

बालगोबिन भगत के जीवन के निम्नलिखित प्रसंग प्रचलित सामाजिक मान्यताओं से विद्रोह को दर्शाते हैं—
1. बेटे के अंतिम संस्कार में पुत्रवधू से अग्नि दिलाना: समाज की परंपरा के अनुसार पुत्र या पुरुष संबंधी ही चिता को आग देते हैं। किंतु भगत ने अपने बेटे के क्रिया-कर्म में पतोहू से ही आग दिलाई।
2. पुत्र की मृत्यु पर गीत गाना: मृत्यु पर विलाप करना सामाजिक परंपरा है। भगत ने बेटे की मृत्यु पर शोक नहीं मनाया, बल्कि उसे ईश्वर से मिलन का उत्सव मानकर गीत गाते रहे।
3. विधवा पुत्रवधू को पुनर्विवाह के लिए भेजना: उस काल में विधवा का पुनर्विवाह समाज में स्वीकार्य नहीं था। श्राद्ध की अवधि पूरी होते ही भगत ने पतोहू के भाई को बुलाकर उसे विदा किया और दूसरी शादी करने का आदेश दिया।
इन तीनों प्रसंगों से सिद्ध होता है कि भगत सामाजिक रूढ़ियों को नहीं मानते थे और मानवीय आधार पर अपने निर्णय लेते थे।

उत्तर: भगत ने तीन प्रसंगों में सामाजिक मान्यताओं को तोड़ा — पुत्र की चिता को पतोहू से अग्नि दिलाई, बेटे की मृत्यु पर गीत गाए और विधवा पतोहू को पुनर्विवाह के लिए विदा किया।

प्रश्न 8

धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं? उस माहौल का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

हल

आषाढ़ की रिमझिम में समूचा गाँव खेतों में उतर आया था। कहीं हल चल रहे थे, कहीं रोपनी हो रही थी। धान के पानी-भरे खेतों में बच्चे उछल रहे थे। औरतें कलेवा लेकर मेंड़ पर बैठी थीं। आसमान बादल से घिरा था, धूप का नाम नहीं, ठंडी पुरवाई बह रही थी।
तभी अकस्मात कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी करती उठी।
बालगोबिन भगत अपने खेत में समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े रोपनी कर रहे थे। एक-एक धान का पौधा पंक्तिबद्ध खेत में बैठाते जा रहे थे और उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ स्वर्ग की ओर भेज रहा था, कुछ पृथ्वी पर खड़े लोगों के कानों की ओर।
इस स्वर का प्रभाव अद्भुत था—
— बच्चे खेलते-खेलते झूम उठे।

— मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठे, वे गुनगुनाने लगीं।
— हलवाहों के पैर ताल से उठने लगे।
— रोपनी करनेवालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगीं।
यह भगत का संगीत था या जादू — इस प्रश्न का उत्तर माहौल में ही था।

उत्तर: आषाढ़ की रिमझिम में खेतों में काम करते भगत का स्वर ऐसा उठा कि बच्चे झूम उठे, औरतें गुनगुनाने लगीं, हलवाहों के पैर ताल पर उठने लगे और रोपनी करनेवालों की अँगुलियाँ अजीब क्रम से चलने लगीं।

प्रश्नावली 7.2 — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 9

पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है?

हल

बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा निम्नलिखित रूपों में प्रकट हुई—

1. कबीर को 'साहब' मानना: भगत कबीर को अपना 'साहब' (स्वामी/गुरु) मानते थे।
2. कबीर के गीत गाना: वे सदा-सर्वदा कबीर के सीधे-सादे पद गाते थे।
3. कबीर के आदेशों का पालन: कबीर की शिक्षाओं को जीवन में उतारते थे — सत्य बोलना, परिग्रह से दूरी, निस्पृह जीवन।
4. कबीरपंथी मठ को दान: खेत की सारी उपज को पहले कबीरपंथी मठ (साहब के दरबार) में ले जाकर 'भेंट' करते और 'प्रसाद' स्वरूप जो मिलता उसी से गुजर करते।
5. कबीरपंथी वेशभूषा: सिर पर कबीरपंथियों की-सी कनफटी टोपी पहनते थे।

इस प्रकार उनकी श्रद्धा केवल गायन में नहीं, जीवन के हर आचरण में अभिव्यक्त होती थी।

उत्तर: भगत ने कबीर को 'साहब' माना, उनके पद गाए, उनकी शिक्षाओं को जीया, खेत की उपज कबीरपंथी मठ में भेंट की और कबीरपंथी टोपी धारण की — इन सभी रूपों में श्रद्धा प्रकट हुई।

प्रश्न 10

आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

हल

भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण रहे होंगे—

1. जीवन-दर्शन की समानता: कबीर भी गृहस्थ जुलाहे थे और साथ ही संत — बाहरी आडंबर के बिना। भगत भी गृहस्थ थे पर आचरण में साधु। दोनों में यह समानता थी।
2. सरल और खरी बात: कबीर के पद सीधे-सादे, सत्य और मर्मस्पर्शी थे। भगत स्वयं सत्यवादी और स्पष्टवक्ता थे, इसलिए कबीर की बातें उन्हें अपनी लगती थीं।
3. सामाजिक रूढ़ियों का विरोध: कबीर ने जाति-प्रथा, पाखंड और रूढ़ियों का विरोध किया था। भगत भी इन्हीं रूढ़ियों से ऊपर उठकर जीते थे — इसलिए कबीर उन्हें अपने आदर्श लगे।
4. ईश्वर-भक्ति का मार्ग: कबीर ने निर्गुण भक्ति और आत्मा-परमात्मा के मिलन पर बल दिया। भगत के अपने विश्वास भी यही थे — बेटे की मृत्यु को भी उन्होंने आत्मा और परमात्मा के मिलन के रूप में देखा।

उत्तर: कबीर और भगत दोनों गृहस्थ होते हुए साधु थे, दोनों सत्यवादी और रूढ़ि-विरोधी थे, दोनों का आत्मा-परमात्मा पर अटूट विश्वास था — इन समानताओं के कारण भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा स्वाभाविक थी।

प्रश्न 11

गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?

हल

आषाढ़ चढ़ते ही गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश उल्लास से भर जाता है, क्योंकि—

1. खेती का मौसम: आषाढ़ में वर्षा का आगमन होता है जो धान की रोपाई के लिए अनिवार्य है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ता है — कहीं हल चलते हैं, कहीं रोपनी होती है।
2. सामूहिकता: यह वह समय है जब किसान-परिवार के सभी सदस्य — बच्चे, महिलाएँ, पुरुष — एकसाथ खेत में काम करते हैं। यह सामूहिक श्रम एक उत्सव-सा बन जाता है।
3. प्रकृति का सौंदर्य: बादलों से घिरा आसमान, धूप का अभाव, ठंडी पुरवाई — सब मिलकर वातावरण को सुखद और उल्लासपूर्ण बनाते हैं।
4. लोकगीत और संगीत: खेतों में काम करते समय लोकगीत गाए जाते हैं। भगत जैसे लोगों का संगीत इस माहौल को और भी जीवंत बना देता है।
5. समृद्धि की आशा: यह मौसम आने वाली फसल और समृद्धि की आशा लेकर आता है, जो हर किसान के मन में उल्लास भरता है।

उत्तर: आषाढ़ में वर्षा के साथ धान की रोपाई शुरू होती है। समूचा गाँव खेतों में उतरता है — सामूहिक श्रम, लोकगीत, प्रकृति की सुषमा और आने वाली फसल की आशा मिलकर वातावरण को उल्लासपूर्ण बना देते हैं।

प्रश्न 12

'ऊपर की तसवीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे।' क्या 'साधु' की पहचान पहनावे के आधार पर की जानी चाहिए? आप किन आधारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि अमुक व्यक्ति 'साधु' है?

हल

नहीं, 'साधु' की पहचान पहनावे के आधार पर नहीं की जानी चाहिए। लेखक ने स्वयं इस भ्रांति को दूर किया है — भगत की वेशभूषा साधु-सी थी, किंतु वे गृहस्थ थे।

साधु की पहचान के वास्तविक आधार—

1. आचरण और सत्यनिष्ठा: जो व्यक्ति कभी झूठ न बोले, खरा व्यवहार रखे — वही वास्तविक साधु है।
2. निस्पृहता: जो व्यक्ति दूसरों की वस्तु का लालच न रखे, बिना अनुमति कोई चीज़ न छुए।
3. निर्लोभी जीवन: जो अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखे और संतोष से जीए।
4. सेवाभाव और परोपकार: जो अपनी कमाई दूसरों के लिए अर्पित कर दे।
5. रूढ़ि-मुक्तता: जो समाज की अंधी परंपराओं से ऊपर उठकर मानवीय मूल्यों पर चले।
6. आध्यात्मिक विश्वास: जिसका ईश्वर पर अटूट विश्वास हो और जो मृत्यु तक उसे न छोड़े।

बालगोबिन भगत इन सभी कसौटियों पर खरे उतरते थे, इसीलिए गृहस्थ होते हुए भी साधु कहलाए।

उत्तर: साधु की पहचान पहनावे से नहीं, आचरण से होनी चाहिए — सत्यनिष्ठा, निर्लोभिता, निस्पृहता, सेवाभाव, रूढ़ि-मुक्तता और ईश्वर में अटूट आस्था — ये ही वास्तविक साधु के लक्षण हैं।

प्रश्न 13

मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करेंगे?

हल

मोह और प्रेम में मूलभूत अंतर है—
मोह: मोह अपने स्वार्थ के लिए किसी से चिपके रहने की भावना है। इसमें अपनी सुविधा और आसक्ति प्रधान होती है।
प्रेम: प्रेम में दूसरे के हित की चिंता होती है। वास्तविक प्रेम त्याग और परिपक्व सोच पर आधारित होता है।
भगत के जीवन की घटना: भगत अपनी पुत्रवधू से बहुत स्नेह रखते थे — वह घर की प्रबंधिका थी, पूरी व्यवस्था सँभालती थी। भगत का बुढ़ापा उस पर निर्भर था।
यदि भगत को मोह होता तो वे पतोहू को रोककर रखते ताकि वह उनकी सेवा करती रहे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।
श्राद्ध की अवधि पूरी होते ही उन्होंने पतोहू के भाई को बुलाया और उसे दूसरी शादी करने का आदेश दिया। जब पतोहू रो-रोकर रहने की विनती करने लगी, तब भगत ने कहा — 'तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा।'
यह निर्णय प्रेम का था — पतोहू की भावी सुख-सुविधा की चिंता — न कि मोह का, जो उन्हें रोककर स्वयं सेवा लेने में होता।

उत्तर: भगत ने बेटे की मृत्यु के बाद पतोहू को पुनर्विवाह के लिए विदा किया, यद्यपि वे जानते थे कि उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं रहेगा। यह स्वार्थी मोह नहीं, निस्स्वार्थ प्रेम था।

प्रश्नावली 7.3 — भाषा-अध्ययन

प्रश्न 14

इस पाठ में आए कोई दस क्रियाविशेषण छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी बताइए।

हल

पाठ 'बालगोबिन भगत' से दस क्रियाविशेषण और उनके भेद—

1. 'हमेशा' (उनका चेहरा हमेशा जगमग किए रहता) — कालवाचक क्रियाविशेषण
2. 'कभी' (कभी झूठ नहीं बोलते) — कालवाचक क्रियाविशेषण
3. 'ऊपर' (ऊपर से एक काली कमली ओढ़े रहते) — स्थानवाचक क्रियाविशेषण
4. 'धीरे-धीरे' (धीरे-धीरे स्वर ऊँचा होने लगता) — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
5. 'लगातार' (उनकी अँगुलियाँ खँजड़ी पर लगातार चल रही थीं) — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
6. 'बिलकुल' (कपड़े बिलकुल कम पहनते) — परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
7. 'पहले' (सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते) — कालवाचक क्रियाविशेषण
8. 'सदा-सर्वदा' (मैं तो मुग्ध था उनके मधुर गान पर—जो सदा-सर्वदा ही सुनने को मिलते) — कालवाचक क्रियाविशेषण
9. 'अकस्मात' (अँधेरे में अकस्मात कौंध उठने वाली बिजली की तरह) — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
10. 'अभी' (अभी, थोड़ी ही देर पहले मुसलधार वर्षा खत्म हुई है) — कालवाचक क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण के भेद—

कालवाचक: जो क्रिया के समय का बोध कराएँ — जैसे हमेशा, कभी, पहले, सदा-सर्वदा, अभी।

स्थानवाचक: जो क्रिया के स्थान का बोध कराएँ — जैसे ऊपर।

रीतिवाचक: जो क्रिया की रीति/तरीके का बोध कराएँ — जैसे धीरे-धीरे, लगातार, अकस्मात।

परिमाणवाचक: जो क्रिया की मात्रा/परिमाण का बोध कराएँ — जैसे बिलकुल।

उत्तर: पाठ से दस क्रियाविशेषण — हमेशा, कभी, ऊपर, धीरे-धीरे, लगातार, बिलकुल, पहले, सदा-सर्वदा, अकस्मात, अभी। ये क्रमशः कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक और परिमाणवाचक भेदों में आते हैं।